खिल उठते हैं बच्चे

फोटो– पुरुषोत्तम

पढ़ने का कौशल विकसित करने के लिए यह बहुत जरूरी है कि बच्चे आपको पढ़ते हुए देखें। इससे उनकी पढ़ने की जिज्ञासा बढ़ती है। बच्चों को गोल घेरे में बैठाकर आप कहानी, किताब पढ़कर सुनाएं। यह ध्यान रहे कि प्रत्येक बच्चे को किताब के चित्र एवं लिखावट साफ–साफ दिखाई दें।

– धर्मपाल गंगवार

मैं जिस विद्यालय में कार्यरत हूं वहां के समुदाय की अधिकतर आबादी निरक्षर है। घरों में पढ़ने का माहौल बिल्कुल नहीं है। ऐसे में विद्यालय में ही मुझे पढ़ने का माहौल बनाना था। सो मैंने विद्यालय में एक सुसज्जित पुस्तकालय का निर्माण किया। इसमें मैंने अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के सहयोग से ढेर सारी बाल साहित्य की पुस्तकें मंगवाई। प्रारंभ में ये किताबें मैंने स्वयं के खर्चे से मंगवाईं बाद में इस मद में धनराशि भी मिलने लगी।

बरखा सीरीज की किताबें विद्यालय में पहले से ही थीं। अब मेरे पुस्तकालय में अच्छा खासा बाल साहित्य उपलब्ध हो गया था। पुस्तकालय की एक दीवार में खुली रैक बनवाई जिसमें किताबों को वर्गीकृत करके रख दिया। सभी किताबें बच्चों की पहुंच में हैं। खाली दीवार पर मैंने कोरी फ्लेक्सी लगाकर बच्चों के नाम लिखकर स्थान बांट दिए। जिससे बच्चे अपनी पढ़ी हुई किताब का नाम अपने नाम वाले कॉलम में लिख सकें। इसके साथ बच्चों को लिखने के मौके देने के लिए स्केच पेन, पेंसिल, कलर आदि भी मैंने पर्याप्त मात्रा में पुस्तकालय में उपलब्ध कराए हैं।

डॉक्टर कृष्ण कुमार की किताब बच्चे की भाषा और अध्यापक तथा गिजुभाई बधेका की पुस्तकें कठिन है माता पिता बनना, माता–पिता से अपेक्षाएं तथा दिवास्वप्न पढ़कर मैं भली–भांति समझ गया था कि डर का वातावरण सीखने की सबसे बड़ी बाधा है। बच्चों में डर ही है जो उन्हें झूठ बोलने को मजबूर करता है। अनेक गलत काम बच्चे केवल डर के कारण ही करते हैं। सो मैं अपने बच्चों को किसी भी प्रकार का दंड बिल्कुल भी नहीं देता हूं। सभी बच्चे मुझसे हाथ मिलाते हैं और प्रसन्नचित्त रहते हैं। प्रत्येक बच्चा यह मानता है कि गुरुजी मुझे ही सबसे अच्छा मानते हैं। प्यार, भरोसा और धैर्य तो सीखने की धुरी हैं। जिन्हें केवल शिक्षक ही दे सकते हैं। बच्चों के साथ आत्मीयता होनी चाहिए। मैंने यह भी समझ बनाई कि सभी बच्चे सीखने के लिए ही बने हैं और हर बच्चे की

सीखने की गति अलग–अलग होती है।

मैंने यह भी तय किया कि बच्चों को संदर्भ के साथ ही पढ़ाना है। जब तक शब्द और वाक्य संदर्भ से न जुड़े तब तक उनका कोई अर्थ नहीं होता है। मनुष्य का मस्तिष्क केवल अर्थपूर्ण सामग्री को ही ग्रहण करता है। मैंने यह भी समझ बनाई कि बच्चा पढ़कर ही पढ़ना सीखता है। पढ़ना सीखना आसान बनाने के लिए सबसे जरूरी है, पढ़ने को आसान बनाना। जब बच्चा पढ़ने की कोशिश कर रहा हो तो हमें टोकाटाकी बिल्कुल नहीं करनी चाहिए। पढ़ने की कोशिश करते समय बच्चे को शाबाशी अवश्य मिलनी चाहिए।

पढ़ने का कौशल विकसित करने के लिए यह बहुत जरूरी है कि बच्चे आपको पढ़ते हुए देखें। इससे उनकी पढ़ने की जिज्ञासा बढ़ती है। बच्चों को गोल घेरे में बैठाकर आप कहानी, किताब पढ़कर सुनाएं। यह ध्यान रहे कि प्रत्येक बच्चे को किताब के चित्र एवं लिखावट साफ–साफ दिखाई दें। अब कहानी पर बातचीत की जा सकती है, चित्र बनवाए जा सकते हैं या कहानी को अपने शब्दों में लिखने या सुनाने को कहा जा सकता है। पढ़ते समय बच्चे चित्र देखकर या यूं ही अनुमान लगाते हैं। अनुमान लगाने का यह कौशल, पढ़ने के कौशल को बढ़ाता है। यदि बच्चा पढ़ते समय किताब में आए किसी शब्द के स्थान पर अपना कोई शब्द इस्तेमाल करता है तो अध्यापक को खुश होना चाहिए।

यह देखने को मिला है कि बच्चे पुस्तकालय में जाने को लालायित रहते हैं। यहां उनके लिए अनेक प्रकार की सचित्र किताबें हैं। किताबें पढ़ने, देखने या पलटने पर किसी प्रकार की पाबंदी नहीं रहती। सो बच्चे किताबों पर टूट पड़ते हैं। मैं सप्ताह में दो बार बरखा सीरीज एवं अन्य बाल साहित्य की पुस्तकें पढ़ाने लगा। कुछ बच्चे मेरे साथ किताबें पढ़ते हैं और कुछ स्वयं पढ़ने की कोशिश करते हैं। पुस्तकालय में अनेक प्रकार के कविता पोस्टर भी हैं सो कुछ बच्चे कविताएं पढ़ते हैं। किताब पढ़ाने के बाद बच्चों के साथ उस पर बातचीत भी होती है। उनसे चित्रों पर भी बातचीत होती है व उन्हें चित्र बनाने के लिए सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। इससे बच्चे बहुत प्रसन्न रहते हैं। उन पर किसी प्रकार का दबाव नहीं रहता है। धीरे–धीरे बच्चों को किताबें पढ़ने अथवा किताबें पढ़ते हुए सुनने में आनंद आने लगा। जब कभी मैं उन्हें पुस्तकालय में नहीं ले जा पाता तो वे कहते कि आज वहां नहीं ले चलोगे। इन बच्चों में दो नाम अमन और मो. अमान मुझे आज भी अच्छी तरह याद हैं। यह कक्षा 2 की बात है। तब मैंने पुस्तकालय के प्रयोग पर एक लेख भी लिखा था जो शैक्षिक प्रवाह में छपा था। कक्षा 2 के अंतिम दिनों तक आयशा, अमन, अमान, सरिता, शिफा, सिमरन तथा रहनुमा बरखा सीरीज व अन्य किताबें अच्छी तरह से पढ़ने लगे थे। साहिल, अंशिका और सिमरन सुंदर चित्र बनाने लगे थे। इस कार्य में अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के साथियों का बड़ा सहयोग रहा है। वे साथी विद्यालय आते रहे हैं और उनसे बातचीत होती रही है। इन विद्यालय के लगभग सभी बच्चे भली–भांति जानते हैं। उनके आने का इंतजार मुझे और सभी बच्चों को रहता है।

पुस्तकालय की गतिविधियां

पुस्तकालय में कई तरह की गतिविधियां की जाती हैं। मैं उन्हें नियमित रूप से कहानियां सुनाता रहा हूं और कक्षा में कहानियां बनवाने पर कार्य भी चलता रहा। कहानी बनाने के लिए कई विधियां प्रयोग में लाई गईं। पहली यह कि पहला वाक्य मैं बोलूंगा फिर मैं जिस बच्चे का नाम लूंगा वह उससे जुड़ा हुआ दूसरा वाक्य बोलेगा। जैसे मैंने बोला एक कुत्ता था। अब मैं जिस बच्चे का नाम लूंगा वह बोल सकता है– कुत्ता काला था। अब तीसरे बच्चे का नाम लेने पर वह बोल सकता है–कुत्ता भूखा था। इसी तरह सिलसिला चलता रहता है और मैं हर एक बच्चे द्वारा बोला गया वाक्य ब्लैकबोर्ड पर लिखता रहता हूं। सभी बच्चों की बारी आती है और धीरे–धीरे ब्लैकबोर्ड भर जाता है। अब सामने होती है स्वयं बनाई हुई एक बढ़िया कहानी। खेल–खेल में ही कहानी बन जाती है। अब एक–एक बच्चा खड़े होकर कहानी पढ़ता है दूसरे बच्चे उसे दोहराते हैं। इसके बाद अपनी कॉपी पर लिखते हैं। इस तरह से कहानी बनाने का सबसे बड़ा फायदा यह होता है कि इसमें हर बच्चा चाहता है कि मेरी भी कोई बात ब्लैकबोर्ड पर लिखी जाय। इससे उनकी अभिव्यक्ति क्षमता का विकास होता है। इस विधि से पढ़ने के कौशल का विकास होता है। जब बच्चे के द्वारा बोला गया वाक्य ब्लैकबोर्ड पर लिखा जाता है तो वह उसे अवश्य पढ़ लेता है चाहे उसे वर्णमाला न भी आती हो।

मैंने कहानी बनाने का दूसरा तरीका यह अपनाया कि ब्लैकबोर्ड पर कुछ शब्द लिख दिए जैसे– लड़की, चिड़िया, हाथी, जंगल, मोर, तितली, वर्षा तथा नदी आदि। अब पूरी कक्षा को चार समूहों में बांटकर प्रत्येक समूह को अलग–अलग बैठाकर उपयुक्त शब्दों को सम्मिलित करते हुए कहानी बनाने को कहा जाता है। इस विधि से बहुत शानदार कहानियां बनती हैं। कहानी

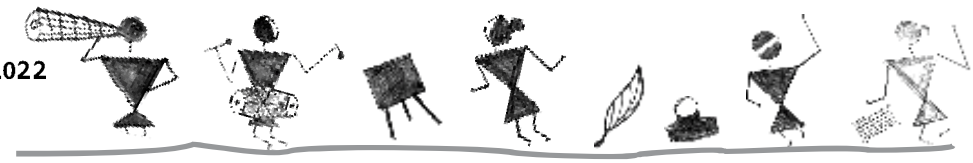

बना लेने के बाद अब पूरी कक्षा एक साथ बैठती है और हर समूह अपनी–अपनी कहानी पढ़कर सुनता है। इस विधि से कहानी बनाने में आनंद यह आता है कि कोई समूह तो लड़की और चिड़िया की दोस्ती करा देता है और कोई समूह मोर और हाथी की। कोई समूह लड़की का नाम, पता और उम्र बताता है और कोई नहीं बताता। कोई समूह जंगल में वर्षा करा देता है और कोई वर्षा के बिना जानवरों और पक्षियों को व्याकुल कर देता है।

जब एक समूह कहानी का वाचन करता है तो दूसरे समूह ध्यान से सुनते हैं टिप्पणी करते हैं कि इस घटना को इस तरह दिखाया गया होता तो और अच्छी कहानी बनती। इसी तरह प्रत्येक समूह अपनी–अपनी कहानी का वाचन करता है और दूसरे समूह उस पर टिप्पणी करते हैं।

कहानियां लिखने का यह कार्य मैंने कक्षा 3 से ही प्रारंभ कर दिया था। इस समय मैंने बच्चों की भावना पर ध्यान दिया भाषा पर नहीं। उनकी भाषाई या वर्तनी की गलती के लिए टोकाटाकी बिल्कुल नहीं की। इससे बच्चों में आत्मविश्वास जगा कि वे भी कहानी लिख सकते हैं। अब वे पुस्तकालय में कहानी या किताब लिखने वाले का नाम जानने की कोशिश करने लगे।

पांचवीं कक्षा में आते–आते वे अपनी अधिकतर कठिनाइयां मुझसे साझा करने लगे। वे पुस्तकालय में जाने का इंतजार करते, न भेजने पर नाराज तक हो जाते। अब तक अधिकतर बच्चे किताबें पढ़ने लगे। अपनी पढ़ी हुई किताब का नाम फ्लैक्सी पर लिख देते। इससे वे एक–दूसरे से पूछते हैं कि यह किताब कैसी लगी? अच्छी बताने पर स्वयं भी वही किताब ढूंढते और पढ़ते हैं। बच्चों में किताबें पढ़ने की आदत सी बन गई। एक होड़ भी लग गई कि सबसे ज्यादा किताबें किसने पढ़ी हैं।

यूं तो सभी किताबें बच्चे बड़े चाव से पढ़ते हैं लेकिन सबसे अधिक जो किताबें पसंद की गई वे हैं गिजूभाई की कहानियां और कजरी गाय। गिजूभाई की कहानियों की मेरे पुस्तकालय में सात किताबें हैं और उनमें लगभग साठ कहानियां हैं। ये कहानियां उत्कृष्ट बाल साहित्य हैं। मैंने अधिकतर कहानियां बच्चों को पढ़कर सुनाई हैं। पढ़कर कहानी सुनाते वक्त वे बच्चे भी कहानी सुनने के लिए बैठ जाते हैं जो भली–भांति पढ़ सकते हैं। गिजूभाई की जो कहानियां सबसे ज्यादा पसंद की गई वे हैं–बगुला बेईमान, सुनहरे बालों वाली लड़की, नकल बिन अकल, बंदरिया खाए सेवइयां, खड़र–खड़र कुछ खोदत है, आप उन्नीस तो हम बीस आदि। इसी तरह कजरी गाय सीरीज की किताबें खूब पढ़ी व सुनी गईं। बरखा सीरीज को सभी बच्चे पसंद करते हैं। आयशा, शिफा तथा शहनाज जैसे कुछ ऐसे पाठक हैं जो चुपके से पुस्तकालय में निकल जाते हैं और शांतिपूर्वक पढ़ते रहते हैं। यहां मैं अपने कुछ ऐसे पाठकों का जिक्र करना चाहूंगा जो हमेशा ही शांत रहते हैं। ये बच्चे केवल दूसरे बच्चों को या मुझे पढ़ते हुए सुनते रहते थे। इन बच्चों के नाम हैं–अंशिका, सानिया और निहाल। मुझे याद है कि ये बच्चे तीसरी तक पढ़ना नहीं सीख पाए थे। चौथी कक्षा के मध्य वर्ष में मेरी सहयोगी अध्यापिका ने बताया कि अंशिका, सानिया और निहाल अच्छे से किताब पढ़ने लगे हैं। मुझे विश्वास नहीं हुआ क्योंकि मैं अक्सर देखता था कि ये शांत बैठे केवल सुनते रहते थे। कक्षा में भी कभी किताब पढ़ने के लिए खड़े नहीं होते थे। अगले दिन जब मैंने जांच की तो मेरे आश्चर्य की सीमा न रही। वास्तव में ये बच्चे बरखा सीरीज व अन्य किताबें आसानी से पढ़ रहे थे। ये बच्चे कैसे पढ़ना सीखे मुझे नहीं पता। मेरे प्रोत्साहन देने पर ये बच्चे कक्षा में भी खड़े होकर पाठ पढ़ने लगे। धीरे–धीरे ये बच्चे नियमित पाठक बन गए।

लेखन और अभिव्यक्ति का विकास करने के लिए मैंने एक और गतिविधि कराई वह है–डायरी लेखन। चौथी कक्षा में मैंने कुछ बच्चों से डायरी लेखन का कार्य कराया था। पांचवीं में मैंने सभी बच्चों को सप्ताह में दो दिन डायरी लिखने को कहा। अधिकतर बच्चों ने सुंदर डायरी लिखी। डायरी लेखन के विषय रोचक थे। अधिकतर बच्चों के विषय अपने आस–पास फैली हुई चीजों पर थे जैसे–स्कूल, बाजार, भोजनमाता, पेड़, घर, गाय, चप्पल, कुत्ता, बकरी, पानी, बादल, ईद, दीपावली, पंद्रह अगस्त, गुरुजी आदि। लेखन का कार्य कराते समय मैंने देखा कि बच्चों की वर्तनी सुधार का सही समय चौथी व पांचवीं कक्षा में होता है। जब बच्चे का लिखा हुआ आप स्वयं पढ़कर सुनाते हैं तो बच्चा अधिकतर स्वयं ही अपनी गलती पकड़ लेता और उसे गलती का अहसास भी होता है। लगातार पाठयक्रम से अलग किताबें पढ़ने, कहानियां सुनने व लिखने, भ्रमण व अवलोकन करने तथा डायरी लेखन जैसी गतिविधियां लगातार संचालित करने से मेरे सभी बच्चों में अंतर्निहित क्षमताओं का निखार हुआ है। सबसे खास बात यह है कि वे अत्यंत प्रसन्न हैं लेकिन यह विद्यालय उन्हें छोड़ना होगा इसको लेकर वह दुःखी भी हो जाते हैं।

(लेखक राजकीय प्राथमिक विद्यालय, हल्दीपचपेड़ा खटीमा, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड में प्रधानाध्यापक हैं।)